Hazrate Aadam عليه السلام Ke Baare Mein
Dilchasp Ma'lumaat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 228
Weekly Booklet : 228

عَلَيْهِ السَّلَام

हज़रते आदम

के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

सफ़हात 22

- हज़रते आदम عليه السلام की पैदाइश 04
- ज़मीन में चश्मे कैसे जारी हुए ? 06
- रूह निकलते वक़्त तक्लीफ़ क्यूं होती है ? 11
- क्या इन्सान पहले बन्दर था 18

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में दिलचस्प मा'लूमात**

सिने त़बाअ़त : जुमादल ऊला **1443** हि., दिसम्बर **2021** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में दिलचस्प मा'लूमात**" मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला : **''ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में दिलचस्प मा'लूमात''** पढ़ या सुन ले, उसे ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमा और उस से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक ने जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ह़ज़रते बीबी ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को पैदा फ़रमाया तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की त़रफ़ दस्ते मह़ब्बत बढ़ाने का इरादा किया तो फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : ऐ आदम ! عَلَيْهِ السَّلَام, ठहर जाएं, पहले इन का मह्र अदा करें। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : इन का मह्र क्या है ? फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : इन का मह्र येह है कि आप हमारे सरदार मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तीन या दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ें। चुनान्चे आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुरूद पढ़ा और फ़िरिश्तों की गवाही से आप عَلَيْهِ السَّلَام का ह़ज़रते बीबी ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से निकाह़ हो गया। इस से मा'लूम हुवा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर मौजूद चीज़ के लिये वसीला हैं यहां तक कि अपने वालिद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का भी वसीला हैं।

(تفسیر صاوی، پ5، النساء، تحت الآیۃ:1، 2/355، شرح الزرقانی علی المواہب، 1/101 ماخوذا)

ह़व्वा से जब आदम का अ़हदे महर दुरूद हुवा
आदम से वोह नूरे ख़ुदा ज़ौजा को तफ़्वीज़ हुवा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه اٰمَنَّا بِرَسُوْلِ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सब से पहले इन्सान और पहले रसूल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** करीम ने ज़मीनो आस्मान बनाने से पहले फ़िरिश्तों को पैदा फ़रमाया फिर जिन्नात को आग के शो'ले से पैदा किया गया और इन के बा'द इन्सान को पैदा किया गया। सब से पहले इन्सान **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे नबी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं और आप पहले रसूल भी हैं जो शरीअ़त ले कर अपनी औलाद की जानिब भेजे गए। ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को अव्वलुर्रुसुल इस वज्ह से कहा जाता है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام कुफ़्रो शिर्क फैलने के बा'द सब से पहले मख़्लूक़ की हिदायत के लिये भेजे गए। (नुज़्हतुल क़ारी, 5/52 मफ़्हूमन) ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पहले ख़लीफ़तुल्लाह भी हैं जैसा कि पारह 1, सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 30 में इर्शाद होता है :

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं।

इस आयत की तफ़्सीर में है : ख़लीफ़ा उसे कहते हैं जो अह़कामात जारी करने और दीगर इख़्तियारात में अस्ल का नाइब होता है। अगर्चे तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام **अल्लाह** पाक के ख़लीफ़ा हैं लेकिन यहां ख़लीफ़ा से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام मुराद हैं और फ़िरिश्तों को ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िलाफ़त की ख़बर इस लिये दी गई कि वोह इन

के ख़लीफ़ा बनाए जाने की हिक्मत मा'लूम करें और उन पर ख़लीफ़ा की अ़ज़मतो शान ज़ाहिर हो कि उन को पैदाइश से पहले ही ख़लीफ़ा का लक़ब अ़ता कर दिया गया है और आस्मान वालों को उन की पैदाइश की ख़ुश ख़बरी दी गई। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 1, अल बक़रह, तहूतल आयह : 30, 1/96)

अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **अल्लाह** करीम इस से पाक है कि उसे किसी से मश्वरे की ज़रूरत हो अलबत्ता यहां ख़लीफ़ा बनाने की ख़बर फ़िरिश्तों को ज़ाहिरी तौ़र पर मश्वरे के अन्दाज़ में दी गई। इस से इशारतन मा'लूम होता है कि कोई अहम काम करने से पहले अपने मा तहूत अफ़्राद से मश्वरा कर लिया जाए ताकि उस काम से मुतअ़ल्लिक़ उन के ज़ेहन में कोई बात हो तो उस का ह़ल हो सके या कोई ऐसी मुफ़ीद राय मिल जाए जिस से वोह काम मज़ीद बेहतर अन्दाज़ से हो जाए। **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से मश्वरा करने का क़ुरआने करीम में हुक्म इर्शाद फ़रमाया। बेशक **अल्लाह** पाक को फ़िरिश्तों और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने अस्ह़ाब से मश्वरा करने की ह़ाजत नहीं है लेकिन मश्वरा करने का फ़रमाना ता'लीमे उम्मत के लिये है ताकि उम्मत भी इस सुन्नत पर अ़मल करे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि जब येह आयते मुबारका ﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ﴾ (پ4، آل عمران:159) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और कामों में इन से मश्वरा लो" नाज़िल हुई तो नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक और उस का रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मश्वरे से मुस्तग़नी (बे परवा) हैं लेकिन **अल्लाह** पाक ने मश्वरे को मेरी उम्मत के लिये रह़मत बना दिया है। (شعب الایمان، 6/76، حدیث:7542)

"सुन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से मश्वरे के बारे में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿ जो शख़्स किसी काम का इरादा करे और उस में किसी मुसल्मान शख़्स से मश्वरा करे **अल्लाह** पाक उसे दुरुस्त काम की हिदायत दे देता है।

(تفسیر در منثور، 7/357)

﴾2﴿ जिस ने मश्वरा किया वोह नादिम (या'नी शरमिन्दा) नहीं होगा।

(معجم اوسط، 5/77، حدیث:6627)

﴾3﴿ जो बन्दा मश्वरा ले वोह कभी बद बख़्त नहीं होता और जो बन्दा ख़ुदराय और दूसरों के मश्वरों से मुस्तग़नी (या'नी बे परवा) हो वोह कभी नेक बख़्त नहीं होता। (تفسیر قرطبی، پ4، آل عمران، تحت الآیۃ:159، 2/193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को बिग़ैर मां बाप के मिट्टी से पैदा फ़रमाया है, आप की पैदाइश का वाक़िआ कुछ यूं है कि **अल्लाह** पाक ने हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म इर्शाद फ़रमाया कि ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी उठा कर लाओ। हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन से मिट्टी उठानी चाही तो ज़मीन ने इस का सबब पूछा। आप ने सारा वाक़िआ बयान किया, इस पर ज़मीन कहने लगी : मैं ख़ुदा की पनाह चाहती हूं इस बात से कि मुझ से कुछ कम किया जाए या मेरी कोई चीज़ ख़राब की जाए, हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام मिट्टी लिये बिग़ैर वापस लौट आए और अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! ज़मीन ने तेरी पनाह मांगी तो मैं तेरे नामे पाक और तेरी इ़ज़्ज़त

का अदब करते हुए वापस आ गया और उसे पनाह दे दी। फिर **अल्लाह** पाक ने हज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा तो उन्हों ने भी उसे पनाह दे दी और बारगाहे इलाही में वोही अर्ज़ की जो हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने की थी। फिर **अल्लाह** पाक ने हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा तो वोह भी इसी तरह वापस आ गए, फिर हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा, जब ज़मीन ने उन से पनाह मांगी तो इन्हों ने फ़रमाया : मैं इस बात से **अल्लाह** पाक की पनाह मांगता हूं कि उस के हुक्म पर अमल किये बिग़ैर वापस चला जाऊं। चुनान्चे उन्हों ने ज़मीन से मिट्टी ले ली तो **अल्लाह** पाक ने रूह क़ब्ज़ करने का काम भी इन्ही के ज़िम्मे लगाया कि तुम ने ही इस मिट्टी को ज़मीन से अलग किया है, तुम ही इस को मिलाना और इन का नाम मलकुल मौत या'नी मौत का फ़िरिश्ता रखा गया।

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 1, अल बक़रह, तहतल आयह : 30, 1/225, تفسیر عزیزی، 1/336)

कितनी क़िस्म की मिट्टियां थीं

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने आदम عَلَيْهِ السَّلَام को एक मुठ्ठी से पैदा किया जो तमाम रूए ज़मीन से ली गई लिहाज़ा औलादे आदम ज़मीन के अन्दाज़े पर आई उन में सुर्ख़ सफ़ेद और काले और दरमियाने और नर्म व सख़्त पलीद व पाक हैं। (ترمذی، 4/444، حدیث:2965)

बा'ज़ हज़रात ने फ़रमाया कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की मिट्टी में 60 क़िस्म के रंग शामिल थे वोह तमाम आप की औलाद में पाए जाते हैं।

(تفسیر صاوی، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:30، 1/48)

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को आदम क्यूं कहते हैं ?

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने इर्शाद फ़रमाया :

बेशक **अल्लाह** पाक ने आदम को जुमुआ़ के दिन अ़स्र के बा'द पैदा फ़रमाया और आप को अदीमुल अर्द़ या'नी ज़ाहिरी ज़मीन की एक मुठ्ठी मिट्टी से पैदा फ़रमाया इस लिये आप को आदम कहते हैं। (تاریخ ابن عساکر، 7/375) और आप की औलाद को आदमी या'नी आदम वाला कहते हैं।

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام चूंकि तमाम इन्सानों के वालिद हैं इस लिये आप की एक कुन्यत अबुल बशर या'नी तमाम इन्सानों के वालिद है, आप عَلَيْهِ السَّلَام की एक कुन्यत अबू मुह़म्मद भी है और जन्नत में भी येह कुन्यत आप की होगी जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि जन्नत में किसी की कुन्यत नहीं होगी सिवाए ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के, और आप की इ़ज़्ज़तो ता'ज़ीम के लिये जन्नत में कुन्यत अबू मुह़म्मद होगी। (تاریخ ابن عساکر، 7/388)

ज़मीन में चश्मे कैसे जारी हुए ?

एक रिवायत में है कि जब **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाने का इरादा किया तो ज़मीन से फ़रमाया : मैं तुझ से एक मख़्लूक़ पैदा फ़रमाने लगा हूं तो जिस ने मेरी फ़रमां बरदारी की उसे मैं जन्नत में दाख़िल करूंगा और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उसे मैं जहन्नम में डाल दूंगा तो ज़मीन ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! क्या तू मुझ से ऐसी मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाएगा जो जहन्नम में जाएगी तो **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : हां, इस पर ज़मीन इस क़दर रोई कि चश्मे जारी हो गए और येह क़ियामत तक जारी रहेंगे।

(تفسیر صاوی، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:30، 1/49)

मय्यित को ख़ुश्बू क्यूं लगाते हैं ?

अल्लाह पाक की बारगाह में ज़मीन ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह पाक !** मुझ से मिट्टी उठाने से मेरी मिट्टी कम हो गई है, **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : घबरा मत, (जब कोई इन्सान) तुझ में वापस आएगा तो पहले से ज़ियादा ह़सीन व ख़ुश्बूदार होगा येही वज्ह है कि मुर्दे को इ़त्र व मुश्क से ख़ुश्बूदार किया जाता है। (تفسیر روح البیان، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:31، 1/98)

इन्सान की ज़िन्दगी में ख़ुशियां कम और ग़म ज़ियादा क्यूं ?

अल्लाह पाक के हुक्म से जब ज़मीन से मिट्टी जम्अ़ कर ली गई तो **अल्लाह** पाक ने हुक्म इर्शाद फ़रमाया कि इस को वहां रखो जहां आज ख़ानए का'बा है, फिर फ़िरिश्तों को हुक्म हुवा कि इस मिट्टी का मुख़्तलिफ़ पानियों से गारा बनाएं। फिर उस पर चालीस दिन बारिश हुई, 39 दिन ग़म की और एक दिन ख़ुशी की, इसी लिये इन्सान की ज़िन्दगी में ख़ुशी कम और ग़म ज़ियादा हैं।

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 1, अल बक़रह, तह़्तल आयह : 30, 1/225)

खजूर, अंगूर और अनार की पैदाइश

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का मुबारक ख़मीर जिस मिट्टी से तय्यार हुवा उस से बच जाने वाली मिट्टी शरीफ़ से खजूर का दरख़्त बनाया गया जैसा कि मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "खजूर का एह़तिराम करो क्यूं कि येह तुम्हारे वालिद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की बची हुई मिट्टी से पैदा की गई है।" और एक रिवायत में है कि खजूर, अनार और अंगूर को ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की बची हुई मिट्टी से पैदा किया गया है। (فیض القدیر، 3/600، تحت الحدیث:3937)

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की मुबारक सूरत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक वुजूद के लिये गारा बना लिया गया तो उसे हवाओं के ज़रीए इतना ख़ुश्क किया गया कि वोह बजने वाली मिट्टी की त़रह़ हो गया जैसे ठीकरी, फिर **अल्लाह** पाक ने फ़िरिश्तों को हुक्म इर्शाद फ़रमाया कि इस को मक्के और त़ाइफ़ के दरमियान वादिये नो'मान में अ़रफ़ात के पहाड़ के नज़्दीक रख दो इस के बा'द **अल्लाह** पाक ने अपने दस्ते क़ुदरत से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का वुजूद बनाया, फ़िरिश्तों ने पहले कभी ऐसी ख़ूब सूरत शक्लो सूरत नहीं देखी थी इस लिये वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का मुबारक वुजूद देख कर बड़े ह़ैरान हुए और उन के इर्द गिर्द तअ़ज्जुब से देखते रहे।

(तफ़्सीरे नई़मी, पारह : 1, अल बक़रह, तह़तल आयह : 30, 1/226 मफ़्हूमन)

इब्लीसे लई़न की बद नसीबी

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की रिवायत में है : हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** पाक ने जन्नत में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सूरत बनाई तो जब तक उसी ह़ालत में रखना चाहा तो उन्हें छोड़े रखा। इब्लीस उन के आस पास गर्दिश करने लगा, वोह देखता था कि येह क्या चीज़ है तो जब उस ने उन्हें ख़ाली पेट देखा तो समझ गया कि येह ऐसी मख़्लूक़ पैदा की गई है जो अपने ऊपर क़ाबू न रखेगी। (या'नी येह मख़्लूक़ शह़वत और ग़ुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू न रखेगी और वस्वसे आसानी से दूर न कर सकेगी।) (مسلم، ص1079، حدیث:6649) एक और रिवायत में है कि ह़ज़रते (شرح السیوطی علی مسلم، 5/538، تحت الحدیث:2611)

आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक वुजूद को देख कर इब्लीस ने येह भी कहा : हां, इस के सीने की बाईं जानिब एक बन्द कोठड़ी है येह ख़बर नहीं कि इस में क्या है शायद येही वोह लत़ीफ़ए रब्बानी की जगह हो जिस की वज्ह से येह ख़िलाफ़त का ह़क़दार हुवा है। (तफ़्सीरे नई़मी, पारह : 1, अल बक़रह, तह़तल आयह : 30, 1/226) इब्लीस ने फ़िरिश्तों से पूछा अगर इसे (या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को) तुम से अफ़्ज़ल बनाया गया तो तुम क्या करोगे ? उन्हों ने कहा : हम **अल्लाह** पाक का हुक्म मानेंगे, बद बख़्त शैत़ाने लईन अपने दिल में कहने लगा अगर इसे मुझ से अफ़्ज़ल बनाया गया तो मैं इस के ताबेअ़ नहीं रहूंगा। (تفسیر روح البیان، پ1، تحت الآیۃ، البقرۃ:31، 1/99)

मश्हूर ग़लत़ फ़हमी

बा'ज़ लोग कहते हैं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक जिस्म में रूह़ डालने से पहले शैत़ान ने इन पर مَعَاذَاللہ थूका था और उस थूक से कुत्ता पैदा हुवा, इस वाक़िए़ के बारे में ह़ज़रत मुफ़्ती वक़ारुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : कुत्ता बनने की येह रिवायत बे बुन्याद और लग़्व (या'नी फ़ुज़ूल) है सह़ीह़ रिवायत में इस का कोई तज़्किरा नहीं मिलता।

(वक़ारुल फ़तावा, 1/344)

कुत्ते की औलादे आदम से मह़ब्बत की वज्ह

ह़ज़रते इमाम ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को ज़मीन पर भेजा तो शैत़ान ने दरिन्दों को आप عَلَيْهِ السَّلَام के ख़िलाफ़ भड़का दिया, जिस के नतीजे में कुत्ते ने सब से पहले आप पर ह़म्ला किया। इतने में ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام उतरे और अ़र्ज़ की : "अपना हाथ इस पर रखें।" ह़ज़रते

आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने ऐसा किया तो कुत्ता सुकून में आ गया, मानूस हो गया और आप की हिफ़ाज़त करने लगा, कुत्ते की तबीअ़त में क़ियामत तक के लिये औलादे आदम की महब्बत रख दी गई।

(الامثال من الکتاب والسنۃ، ص27-28ملتقطا)

जुमुआ़ को जुमुआ़ कहने की वज्ह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जुमुआ़ के मा'ना हैं मुज्तमअ़ होना, मुकम्मल होना, जुमुआ़ को जुमुआ़ इसी लिये कहते हैं कि इस दिन में ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) के जिस्म शरीफ़ की तक्मील हुई। फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेहतरीन दिन जिस में सूरज निकले वोह जुमुआ़ का दिन है, इसी दिन ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा किया गया, इसी दिन उन्हें (जन्नत से ज़मीन पर) उतारा गया, इसी दिन उन की तौबा क़बूल फ़रमाई गई, इसी दिन उन की वफ़ात हुई और इसी दिन क़ियामत क़ाइम होगी। (ابوداود، 1/390، حدیث:1046) यहां ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश से मुराद या तो उन के जिस्म शरीफ़ की तक्मील है, या जिस्म शरीफ़ में रूह़ फूंकना मुराद है क्यूं कि ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के जिस्म की साख़्त तो बहुत अ़र्से तक होती रही, हर क़िस्म की मिट्टी पानी का जम्अ़ फ़रमाना फिर उस का ख़मीर करना, फिर आ'ज़ाए ज़ाहिरी बातिनी का बनाना, फिर बहुत रोज़ तक सुखाना, इस में बहुत दिन लगे, येह एक दिन और एक साअ़त में नहीं हुवा। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/606)

दोशम्बा मुस्त़फ़ा का जुम्अ़ए आदम से बेहतर है सिखाना क्या लिह़ाज़े ह़ैसिय्यत ख़ूए तअम्मुल को

अल्फ़ाज़ मआ़नी : दोशम्बा : पीर शरीफ़ का दिन। **ख़ूए तअम्मुल :** सोचने की आ़दत।

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत बड़ी प्यारी बात फ़रमा रहे हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की वज्ह से सारी काएनात को पैदा किया गया आप न होते तो कुछ न होता लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का यौमे विलादत पीर शरीफ़ का दिन ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के यौमे विलादत जुमुआ़ के दिन से अफ़्ज़ल है, सोच व बिचार की आ़दत को येह समझाना मुश्किल नहीं है क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के भी आक़ा और सारे नबियों के सरदार, शहन्शाहे अबरार हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

इन्सान के जिस्म से रूह़ निकलते वक़्त तक्लीफ़ क्यूं होती है ?

अल्लाह पाक ने जब रूह़ को ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के जिस्म में दाख़िल होने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया तो रूह़ ने अ़र्ज़ किया : **या अल्लाह पाक !** येह जगह निहायत गहरी और अंधेरी है। तीन बार हुक्मे इलाही हुवा और तीनों बार रूह़ ने येही अ़र्ज़ की तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : न चाहते हुए दाख़िल हो रही है तो फिर निकलने में भी सख़्त तक्लीफ़ होगी। येही वज्ह है कि जब इन्सान के जिस्म से रूह़ निकलती है तो सख़्त तक्लीफ़ होती है। (تفسیر روح البیان، پ1/100، البقرۃ، تحت الآیۃ:31) तफ़्सीरे नईमी में है कि बा'ज़ रिवायात में है : तब नूरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वोह मुबारक क़ालिब (या'नी वुजूद) जगमगा दिया गया या'नी वोह नूर पेशानिये आदम عَلَيْهِ السَّلَام में अमानत रखा गया अब रूह़ आहिस्ता आहिस्ता दाख़िल होने लगी। (तफ़्सीरे नईमी, 1/226)

सब से पहले छींक किस को आई

सब से पहले रूह़ सरे मुबारक में दाख़िल हुई तो ह़ज़रते आदम

عَلَيْهِ السَّلَام को छींक आई, **अल्लाह** पाक ने आप के दिल में اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहने का इल्हाम फ़रमाया तो आप ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه पढ़ा इस पर ख़ुद **अल्लाह** करीम ने يَرْحَمُكَ اللّٰه फ़रमाया ।[1] जब रूह़ कमर शरीफ़ तक पहुंची तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उठना चाहा मगर नीचे तशरीफ़ ले आए क्यूं कि नीचे के हिस्से तक अभी रूह़ नहीं पहुंची थी, जब तमाम जिस्म में रूह़ पहुंच गई तो **अल्लाह** पाक ने आप को इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम ! मैं कौन हूं ? ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : तू **अल्लाह** है तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : तुम ने सह़ीह़ कहा । (تاریخ ابن عساکر، 7/385) तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि **अल्लाह** पाक ने आप को इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम ! फ़िरिश्तों की इस बैठी हुई जमाअ़त के पास जाओ और कहो : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم । चुनान्चे उन्हों ने "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" कहा तो फ़िरिश्तों ने जवाब दिया : عَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰه फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** पाक की बारगाह में वापस ह़ाज़िर हुए तो **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : येह तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का आपस में सलाम है ।

(ترمذی، 5/241، حدیث:3379)

सलाम की बरकतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो : इस वाक़िए़ से येह भी पता चला कि सलाम करना बहुत पुरानी सुन्नत है, फ़ैज़ाने सलाम आ़म करें और ख़ूब रह़मते ख़ुदावन्दी से हिस्सा पाएं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की

1... अब भी छींकने वाले को اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना चाहिये और सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन "يَرْحَمُكَ اللّٰه" कहे । (बहारे शरीअ़त, 3/477, हिस्सा : 16)
ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़ह़ा 3 पर त़ह़त़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को सुन्नते मुअक्कदा लिखा है । (550 सुन्नतें और आदाब, स. 36)

दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी सुन्नतें आ़म करती और घर घर सुन्नत का पैग़ाम पहुंचाती है। 72 नेक आ'माल के रिसाले में नेक अ़मल नम्बर 30 है : "क्या आज आप ने घर, दफ़्तर, बस, ट्रेन वग़ैरा में आते जाते और गलियों से गुज़रते हुए राह में खड़े या बैठे मुसल्मानों को सलाम किया ?"

शहा ! ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं तेरी सुन्नतें सिखाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आंख, कान और नाक में क़ुदरत के करिश्मे

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग, अहले बैते अत़्हार के रोशन चराग़, ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने दादा (ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक ने अपने फ़ज़्लो करम से इब्ने आदम (या'नी इन्सान) की आंखों में "**नमकीनी**" रखी क्यूं कि येह दोनों चरबी के टुकड़े हैं अगर ऐसा न होता तो येह पिघल जाते। **अल्लाह** पाक ने इब्ने आदम पर मेह्रबानी करते हुए इस के कानों में "**कड़वाहट**" रखी, जो कीड़े मकोड़ों के लिये रुकावट है क्यूं कि अगर कोई कीड़ा कान में दाख़िल हो जाए तो दिमाग़ तक पहुंच जाए लेकिन जब कड़वाहट चखता है तो निकल भागता है। **अल्लाह** पाक ने अपनी रह़मत से इब्ने आदम के नाक के सूराख़ों में "**ह़रारत**" (या'नी गर्माइश) रखी जिस से वोह बू सूंघता है अगर येह न हो तो दिमाग़ बदबूदार हो जाए। **अल्लाह** पाक ने इब्ने आदम पर फ़ज़्लो एह़सान करते हुए इस के होंटों में "**मिठास**" रखी जिस के ज़रीए वोह ज़ाएक़ा चखता है और लोग इस की गुफ़्तगू की मिठास से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं।"

(حلیۃ الاولیاء، 3/229، رقم:3797, **अल्लाह** वालों की बातें, 3/285)

कौन फ़रमां बरदारी करता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक ने जब ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया तो फ़िरिश्तों ने कहा : **अल्लाह** पाक ऐसी मख़्लूक़ पैदा नहीं फ़रमाएगा जो हम से ज़ियादा इल्म वाली और बारगाहे इलाही में हम से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाली हो। फ़िरिश्ते ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए आज़्माए गए इसी त़रह़ **अल्लाह** पाक बन्दों को आज़्माइश में मुब्तला फ़रमाता है ताकि ज़ाहिर हो कि कौन फ़रमां बरदारी करता और कौन ना फ़रमानी करता है और जो दुन्या व आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता है वोह एक की दूसरे पर फ़ज़ीलत जान लेता है और पहचान लेता है कि दुन्या आज़्माइश का घर और फ़ना होने वाली है जब कि आख़िरत बदले का हमेशा बाक़ी रहने वाला घर है, लिहाज़ा (अगर तुम त़ाक़त रखते हो तो) उन लोगों में से हो जाओ जो दुन्या की ज़रूरत को आख़िरत की ज़रूरत की ख़ातिर छोड़ देते हैं और नेकी की तौफ़ीक़ **अल्लाह** पाक ही की त़रफ़ से मिलती है।

(تفسیر طبری، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:30، 1/242، تفسیر در منثور، البقرۃ، تحت الآیۃ:219، 1/611 ملتقطاً)

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का क़द मुबारक

बुख़ारी शरीफ़ में है : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का (मुबारक) क़द 60 गज़ (या'नी 90 फ़ुट) था। जो भी जन्नत में जाएगा वोह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सूरत पर होगा और उस का क़द 60 गज़ होगा फिर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द अब तक मख़्लूक़ (क़दो क़ामत में) कम होती रही है। (بخاری، 4/164، حدیث:6227)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : जन्नत में सिर्फ़ इन्सान ही जाएंगे, जानवर या

जिन्नात न जाएंगे और तमाम जन्नती इन्सान आदम عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ ह़सीनो जमील तन्दुरुस्त होंगे कोई बद शक्ल या बीमार न होगा और सब का क़द 60 हाथ होगा कोई इस से कम या ज़ियादा न होगा, दुन्या में ख़्वाह पस्त (या'नी छोटा) क़द था या दराज़ (या'नी लम्बा) क़द, बच्चा था या बूढ़ा, मगर येह कमी सिर्फ़ दुन्या में है आख़िरत में जन्नत में पूरी कर दी जावेगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/313, 314 मुल्तक़त़न)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ब ज़ाहिर इतना लम्बा क़द होना अ़जीब और ना मुम्किन मा'लूम होता है लेकिन **अल्लाह** पाक की क़ुदरत पर नज़र की जाए तो न येह अ़जीब है और न ही ना मुम्किन, क्यूं कि **अल्लाह** पाक इतने लम्बे क़द वाला इन्सान बनाने पर बिल्कुल क़ादिर है।

है पाक रुत्बा फ़िक्र से उस बे नियाज़ का कुछ दख़्ल अ़क़्ल का है न काम इम्तियाज़ का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सब से अफ़्ज़ल मख़्लूक़

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : औलादे आदम का आपस में इस बात पर झगड़ा हुवा कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाली मख़्लूक़ कौन सी है ? बा'ज़ ने कहा : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने इन्हें अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया, फ़िरिश्तों को इन के सामने सज्दा करवाया। बा'ज़ ने कहा : **अल्लाह** पाक की बारगाह में सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाली मख़्लूक़ फ़िरिश्ते हैं जो उस की ना फ़रमानी नहीं करते। दूसरों ने कहा : हमारे और तुम्हारे दरमियान इस बात में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام फ़ैसला करेंगे फिर उन्हों ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर इस बात का सुवाल किया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया :

मेरा बेटा मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल हैं। **अल्लाह** पाक ने जब मेरे अन्दर रूह फूंकी और रूह मेरे क़दमों तक पहुंच गई तो मैं इत्मीनान के साथ बैठ गया, फिर मेरे लिये अ़र्श की बिजली चमकी और मैं ने अ़र्श पर नज़र की तो उस पर "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" लिखा हुवा था लिहाज़ा **अल्लाह** पाक के नज़्दीक लोगों में सब से अफ़्ज़ल हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात है। (تاریخ ابن عساکر، 7/386، رقم:578)

ज़ाहिर में मेरे फूल हक़ीक़त में मेरे नख़्ल इस गुल की याद में येह सदा बुल बशर की है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 208)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : गुल : फूल। **सदा :** आवाज़। **अबुल बशर :** तमाम इन्सानों के वालिद हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام।

शर्हे कलामे रज़ा : हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام हमारे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ याद फ़रमाया करते थे : يَاابْنِيْ صُوْرَةً وَّمَعْنًى اَبِيْ या'नी ऐ मेरे बेटे आप सूरत में मेरे बेटे हैं लेकिन ह़क़ीक़त में आप मेरे वालिद हैं। क्यूं कि अगर आप न होते तो मैं भी न होता बल्कि कुछ भी न होता।

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 178)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जन्नती और जहन्नमी

अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें बताने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते आदम को पैदा फ़रमाया फिर उन की पीठ पर अपना सीधा हाथ फेरा तो इस से उन

की औलाद निकली, **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : मैं ने इन्हें जन्नत के लिये पैदा फ़रमाया है येह जन्नतियों वाले काम करेंगे फिर दोबारा उन की पुश्त पर हाथ फेरा तो इस से औलाद निकली फिर फ़रमाया : मैं ने इन्हें जहन्नम के लिये पैदा किया है येह लोग दोज़ख़ियों वाले काम करेंगे। (ترمذی،5/52،حدیث:3086)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पीठ पर सीधा हाथ फेरा" के बारे में फ़रमाते हैं : येह इबारत मुतशाबिहात में से है या'नी उन की पुश्त मुबारक पर तवज्जोहे क़ुदरत फ़रमाई वरना रब हाथ के ज़ाहिरी मा'ना और दाह्ने बाएं से पाक है, नुत्फ़ा मर्द की पीठ में रहता है, इस लिये तवज्जोह पुश्त पर फ़रमाई गई। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/104)

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ह़ुस्न

एक और रिवायत में है : जब **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया और उन की पीठ पर हाथ फेरा तो उन की पुश्त से ता क़ियामत उन की औलाद की रूहें निकलीं जिन्हें **अल्लाह** पाक पैदा फ़रमाने वाला है और उन में से हर इन्सान की दोनों आंखों के दरमियान नूर की चमक दी, फिर उन्हें ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर पेश फ़रमाया, वोह बोले : ऐ रब ! येह कौन हैं ? फ़रमाया : तुम्हारी औलाद, इन में एक शख़्स को देखा तो उस की आंखों के दरमियान की चमक पसन्द आई। आप ने अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! येह कौन है ? फ़रमाया : दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام)। अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! इन की उ़म्र कितनी मुक़र्रर फ़रमाई है ? **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : 60 साल। आप ने अ़र्ज़ किया : मौला ! मेरी उ़म्र में से चालीस साल इन्हें बढ़ा दे। (ترمذی،5/53،حدیث:3087)

क्या इन्सान पहले बन्दर था

बानिये दा'वते इस्लामी शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : काफ़ी पुरानी बात है कि मेरा किसी दुन्यवी पढ़े लिखे से वासित़ा पड़ा। बातों ही बातों में न जाने उसे क्या सूझी कि तख़्लीक़े इन्सानी के बारे में बात करने लगा कि क़ुरआने पाक इन्सान की पैदाइश के बारे में कहता है कि ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से इन्सान पैदा हुवा और उन्ही से इन्सान की नस्ल चली जब कि डार्वन कहता है कि इन्सान बन्दर से वुजूद में आया। इस के बा'द उस ने येह बका कि "डार्वन की बात कुछ कुछ समझ आती है।" येह सुन कर मैं बिल्कुल परेशान हो गया कि इस ने तो अपने ईमान का जनाज़ा उठा दिया है क्यूं कि इस ने क़ुरआने पाक पर शक किया और कहा कि "डार्वन की बात कुछ कुछ समझ आती है।" क़ुरआने करीम के मुक़ाबले में किसी की बात थोड़ी भी क्यूं समझ आए ? ऐसी समझ को चूल्हे में डाल देना चाहिये, येह किस काम की है ? बहर ह़ाल फिर मैं ने मौक़अ़ मिलते ही उस को समझा कर तौबा करवाई और कलिमा पढ़ाया कि येह बात तो इस्लाम से ख़ारिज कर देने वाली है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 51)

तख़्लीक़े इन्सानी के ह़वाले से दुरुस्त और इस्लामी अ़क़ीदा

मुसल्मानों का अ़क़ीदा है कि इन्सानों की इब्तिदा ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से हुई और इसी लिये आप عَلَيْهِ السَّلَام को अबुल बशर या'नी इन्सानों का बाप कहा जाता है। और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से इन्सानिय्यत की इब्तिदा होना बड़ी क़वी (या'नी मज़बूत़) दलील से साबित है मसलन

दुन्या की मर्दम शुमारी से पता चलता है कि आज से सो साल पहले दुन्या में इन्सानों की ता'दाद आज से बहुत कम थी और इस से सो बरस पहले और भी कम, तो इस त़रह़ माज़ी की त़रफ़ चलते चलते इस कमी की इन्तिहा एक ज़ात क़रार पाएगी और वोह ज़ात ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं या यूं कहिये कि क़बीलों की कसीर ता'दाद एक शख़्स पर जा कर ख़त्म हो जाती हैं मसलन सय्यिद दुन्या में करोड़ों पाए जाएंगे मगर उन की इन्तिहा रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ज़ात पर होगी, यूंही बनी इसराईल कितने भी कसीर हों मगर इस तमाम कसरत का इख़्तिताम ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की एक ज़ात पर होगा। अब इसी त़रह़ और ऊपर को चलना शुरूअ़ करें तो इन्सान के तमाम कुम्बों, क़बीलों की इन्तिहा एक ज़ात पर होगी जिस का नाम तमाम आस्मानी किताबों में आदम है और येह तो मुम्किन नहीं है कि वोह एक शख़्स पैदाइश के मौजूदा त़रीक़े से पैदा हुवा हो या'नी मां बाप से पैदा हुवा हो क्यूं कि अगर उस के लिये बाप फ़र्ज़ भी किया जाए तो मां कहां से आए और फिर जिसे बाप माना वोह ख़ुद कहां से आया ? लिहाज़ा ज़रूरी है कि उस की पैदाइश बिग़ैर मां बाप के हो और जब बिग़ैर मां बाप के पैदा हुवा तो बिल यक़ीन वोह इस त़रीक़े से हट कर पैदा हुवा और वोह त़रीक़ा क़ुरआन ने बताया कि **अल्लाह** पाक ने उसे मिट्टी से पैदा किया जो इन्सान की रिहाइश या'नी दुन्या का बुन्यादी जुज़ है। फिर येह भी ज़ाहिर है कि जब एक इन्सान यूं वुजूद में आ गया तो दूसरा ऐसा वुजूद चाहिये जिस से नस्ले इन्सानी चल सके तो दूसरे को भी पैदा किया गया लेकिन दूसरे को पहले की त़रह़ मिट्टी से बिग़ैर मां बाप के पैदा करने की बजाए जो एक शख़्से इन्सानी

मौजूद था उसी के वुजूद से पैदा फ़रमा दिया क्यूं कि एक शख़्स के पैदा होने से नौअ़ मौजूद हो चुकी थी चुनान्चे दूसरा वुजूद पहले वुजूद से कुछ कमतर और आ़म इन्सानी वुजूद से बुलन्द तर त़रीक़े से पैदा किया गया या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की एक बाईं पस्ली उन के आराम के दौरान निकाली और उन से उन की बीवी ह़ज़रते बीबी ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को पैदा किया गया। चूंकि ह़ज़रते बीबी ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا मर्द व औ़रत वाले बाहमी मिलाप से पैदा नहीं हुईं इस लिये वोह औलाद नहीं हो सकतीं।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 4, अन्निसाअ, तह़्तल आयह : 1, 2/139 ब तग़य्युरे क़लील)

फ़ेहरिस

सब से पहले इन्सान और पहले रसूल	2	इब्लीसे लईन की बद नसीबी	8
ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश	4	कुत्ते की औलादे आदम से महब्बत की वज्ह	9
ह़ज़रते आदम को आदम क्यूं कहते हैं ?	5	रूह़ निकलते वक़्त तक्लीफ़ क्यूं होती है ?	11
ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत	6	ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का क़द मुबारक	14
ज़मीन में चश्मे कैसे जारी हुए ?	6	ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ह़ुस्न	17
मय्यित को ख़ुश्बू क्यूं लगाते हैं ?	7	क्या इन्सान पहले बन्दर था	18
इन्सान की ख़ुशियां कम और ग़म ज़ियादा क्यूं ?	7	तख़्लीक़े इन्सानी के ह़वाले से इस्लामी अ़क़ीदा	18
खजूर, अंगूर और अनार की पैदाइश	7		
आदम عَلَيْهِ السَّلَام की मुबारक सूरत	8		

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की गिर्या व ज़ारी

ह़ज़रते बुरैदा رضی اللہ عنہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम अहले ज़मीन की गिर्या व ज़ारी का ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के रोने से मुवाज़ना किया जाए तो वोह आप की गिर्या व ज़ारी के बराबर न होगा।"

(تاریخ ابن عساکر، 415/7)